RNI NO. : DEL/BIL/2004/14598

Youngster

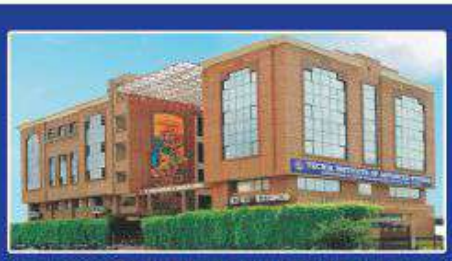

WHERE DREAM CHISELS INTO REALITY

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • OCTOBER 2024 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

Empowering Women: The Essential Need for Gender Equality in India

MANVI TYAGI

Gender equality is not merely a fundamental human right; it is a cornerstone of a just and equitable society. In India, a country marked by rich cultural diversity yet entrenched in patriarchal norms, the empowerment of women through gender equality is paramount. The need for gender equality in India transcends individual rights; it is vital for the holistic development of the nation and the well-being of its citizens.

Economic Empowerment

One of the most compelling reasons for promoting gender equality is its potential to drive economic growth. Women constitute nearly half of India's population, yet their labor force participation is approximately 23%, which is significantly lower than the global average. By empowering women economically—through access to education, vocational training, and employment opportunities—India can tap into a vast pool of talent and innovation. Studies have shown that if women's participation in the workforce increased, it could add $770 billion to India's GDP by 2025. Therefore, gender equality is not only a moral imperative but also an economic necessity.

Educational Opportunities

Education is a powerful enabler of gender equality. When girls are educated, they become more informed and capable of making decisions that affect their lives and those of their families. However, numerous barriers prevent girls in India from accessing education, including poverty, cultural norms, and safety concerns. Initiatives such as Beti Bachao Beti Padhao aim to promote girls' education and ensure that they receive the same educational opportunities as boys. Empowering women through education helps break the cycle of poverty and fosters a generation that values equality, thereby contributing to social progress.

Health and Well-being

Gender equality has significant implications for the health and well-being of women and children. Women often face discrimination in accessing healthcare, resulting in higher maternal and infant mortality rates. By addressing gender disparities in health services, India can improve overall health outcomes. Women's empowerment also leads to healthier families, as educated women are more likely to seek medical care, provide better nutrition, and invest in their children's education. Improving women's health not only benefits families but also strengthens communities and contributes to national development.

Social Justice and Human Rights

The struggle for gender equality in India is fundamentally a fight for social justice and human rights. Women continue to face various forms of violence and discrimination, including domestic abuse, dowry-related violence, and sexual harassment. Legal reforms like the Protection of Women from Domestic Violence Act and the Sexual Harassment of Women at Workplace Act are steps in the right direction, but their implementation remains a challenge. A comprehensive approach involving legal, social, and educational measures is needed to create an environment where women can live free from fear and discrimination.

Engaging Men and Boys

Achieving gender equality requires the active involvement of men and boys. It is essential to challenge societal norms that reinforce traditional notions of masculinity and patriarchy. Educating men about gender issues and fostering a culture of respect and equality can create allies in the fight for women's rights. Awareness programs aimed at young boys can instill values of empathy and equality, ensuring that future generations are committed to creating a balanced society.

Conclusion

Empowering women through gender equality is not only a necessity for India but also a pathway to national progress. It fosters economic growth, enhances educational attainment, improves health outcomes, and promotes social justice. The journey toward gender equality requires collective efforts from all sectors—government, civil society, and individuals—to challenge existing norms and create inclusive policies. As India moves forward, embracing gender equality will ensure that every woman and girl has the opportunity to realize her full potential, ultimately leading to a more prosperous and equitable society for all. The time for action is now, as the empowerment of women is essential for the development of the nation.

शुभ नवरात्री

आप सभी को नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ

नवरात्रि प्रकृति में शक्ति की उपासना का पर्व है। नवरात्रि के पावन पर्व में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की विधिवत पूजा-अर्चना का विधान है। देवी के ये नौ रुप शक्ति के विभिन्न स्वरुपों में हमारे सामने प्रकट होते हैं। देवी दुर्गा के ये नौ रुप हमें न केवल आस्था और विश्वास बल प्रदान करते हैं, बल्कि जीवन के हर पहलू में साहस, धैर्य और समर्पण का मार्ग दिखाते हैं।

नवरात्रि का पहला दिन

माता शैलपुत्री

नवरात्रि का पहला दिन... जब हम माँ दुर्गा के पहले स्वरूप की उपासना करते हैं, जिन्हें हम माँ शैलपुत्री के नाम से जानते हैं।

माँ शैलपुत्री, हिमालय की पुत्री हैं। 'शैल' का अर्थ है पर्वत, और 'पुत्री' का अर्थ है बेटी—इसलिए वह पर्वतराज हिमालय की पुत्री के रूप में जानी जाती हैं। उनका यह रूप न केवल उनकी अलौकिक शक्ति का प्रतीक है, बल्कि प्रकृति में स्थिरता की ऊर्जा को भी दर्शाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, माँ शैलपुत्री का जन्म हिमालय के घर हुआ था। पूर्व जन्म में वे राजा दक्ष की पुत्री सती थीं, जिन्होंने अपने पति भगवान शिव के अपमान के बाद योगाग्नि में खुद को भस्म कर दिया था। अगले जन्म में वे हिमालय के घर शैलपुत्री के रूप में अवतरित हुईं, और पुनः भगवान शिव की पत्नी बनीं।

माँ शैलपुत्री का स्वरूप अत्यंत दिव्य और सुंदर है। उनके एक हाथ में त्रिशूल है, जो शक्ति और साहस का प्रतीक है। दूसरे हाथ में कमल का फूल है जो शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक है। वे वृषभ पर सवार हैं, जो उनकी स्थिरता और धैर्य को दर्शाता है।

नवरात्रि के पहले दिन भक्त माँ शैलपुत्री की पूजा करते हैं। इस दिन माँ की उपासना में सफेद फूलों का विशेष महत्व है। भक्त उनकी पूजा में दीपक जलाते हैं, कमल का फूल अर्पित करते हैं, और व्रत का पालन करते हैं। ऐसा माना जाता है कि माँ शैलपुत्री की आराधना से जीवन में स्थिरता और सुख की प्राप्ति होती है।"

माँ शैलपुत्री का ध्यान करना मन को स्थिरता प्रदान करता है। यह रूप हमें सिखाता है कि जीवन में चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ हों, हमें अडिग रहकर उनका सामना करना चाहिए ठीक वैसे ही जैसे पर्वत अपनी जगह से कभी नहीं हिलता। माँ शैलपुत्री हमें धैर्य और साहस का पाठ पढ़ाती हैं। माँ शैलपुत्री का यह रूप हमें जीवन के संघर्षों से लड़ने की शक्ति देता है। उनकी कृपा से भक्त को साहस, आत्मविश्वास और मानसिक शांति प्राप्त होती है। उनके चरणों में सच्ची श्रद्धा और भक्ति से झुकने वाला हर व्यक्ति जीवन में स्थिरता और सुख की प्राप्ति करता है।

तो आइए, इस नवरात्रि के पहले दिन, हम माँ शैलपुत्री की आराधना करें और उनसे जीवन में स्थिरता, धैर्य और साहस की प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त करें।

नवरात्रि का दूसरा दिन

नवरात्रि के दूसरे दिन, माँ दुर्गा के दूसरे रूप, माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना की जाती है। यह स्वरूप तप, त्याग और संयम का प्रतीक है। चलिए, आज के इस कार्यक्रम में हम आपको इस दिव्य स्वरूप के बारे में विस्तार से बताते हैं।"

माँ ब्रह्मचारिणी को योगी रूप में जाना जाता है। ब्रह्मचारिणी का अर्थ है— वह जो ब्रह्मचर्य का पालन करती हैं। वह तपस्या और ध्यान की देवी हैं। इन्हें तपस्या की देवी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इन्होंने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तप किया था। माँ के इस स्वरूप में वे माला और कमण्डल धारण किए हुए हैं, जो साधना और संयम का प्रतीक माना जाता है कि माँ ब्रह्मचारिणी ने हजारों वर्षों तक कठिन तप किया, अपने शरीर को तपस्या के दौरान त्याग दिया और केवल भगवान शिव को पाने के उद्देश्य से ध्यानमग्न रहीं। माँ ब्रह्मचारिणी का यह स्वरूप हमें जीवन में धैर्य, तप और त्याग के महत्व को सिखाता है। उनका संदेश है कि यदि हम अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें, तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी।"

माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा विशेष रूप से उनके भक्तों को संयम, तप, और साधना की ओर प्रेरित करती है। कहते हैं, जो व्यक्ति सच्चे मन से माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा करता है, उसे आत्म-नियंत्रण और आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। वह व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों का सामना धैर्यपूर्वक कर सकता है।"

माँ ब्रह्मचारिणी का आशीर्वाद हमें यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाई हो, हमें अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना चाहिए। यह नवरात्रि का दूसरा दिन हमें तपस्या और समर्पण के गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

नवरात्रि का तीसरा दिन

माता चंद्रघंटा

यह दिन माँ दुर्गा के तीसरे स्वरूप की आराधना का है। इस दिन हम माँ चंद्रघंटा की पूजा करते हैं। उनका यह रूप शांति, शक्ति, और साहस का अद्भुत संगम है।

माँ चंद्रघंटा, जिनके मस्तक पर आधा चंद्रमा सुशोभित है, उनके इस अद्वितीय रूप के कारण ही उन्हें 'चंद्रघंटा' कहा जाता है। उनके गले में घंटों की माला है, जिनकी ध्वनि से दुष्टों का संहार होता है और भक्तों के जीवन में शांति आती है।

नवरात्रि के तीसरे दिन, भक्त माँ चंद्रघंटा की पूजा करते हैं। उनकी पूजा में घंटों की ध्वनि का विशेष महत्व है। ऐसा माना जाता है कि माँ चंद्रघंटा की पूजा से जीवन के सभी संकट और कष्ट दुर हो जाते हैं। उनकी कृपा से भक्त को साहस, शक्ति और मानसिक शांति की प्राप्ति होती है।

माँ चंद्रघंटा दस भुजाओं वाली हैं और उनके हाथों में अनेक अस्त्र-शस्त्र विराजमान हैं। वे सिंह पर सवार होकर युद्ध के लिए तत्पर रहती हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, माँ चंद्रघंटा ने राक्षसों का संहार कर इस धरा पर शांति स्थापित की थी। देवी का यह रूप साहस और शक्ति का प्रतीक है। माँ चंद्रघंटा की उपासना से हम अपने जीवन में आंतरिक और बाहरी भय पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

माँ चंद्रघंटा का ध्यान करना हमें आंतरिक शांति और संतुलन प्रदान करता है। उनके इस रूप की आराधना से हमें आक्रोश, तनाव और संघर्ष के बीच भी धैर्य और मानसिक शांति की शक्ति प्राप्त होती है। उनका यह रूप हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी हमें अपना संतुलन और शांति बनाए रखनी चाहिए।

माँ चंद्रघंटा की कृपा से भक्तों के जीवन में शांति और सुख का संचार होता है। उनकी आराधना से नकारात्मक ऊर्जा दुर हो जाती है और भक्त के जीवन में सकारात्मकता का आगमन होता है। वह हमें संघर्षों का सामना करने की शक्ति देती हैं और हमारे मनोबल को मजबूत करती हैं।

नवरात्रि का चौथा दिन

मां कूष्माण्डा

इस दिन माँ दुर्गा के चौथे रूप की आराधना करते हैं। यह रूप है माँ कूष्माण्डा का, जिनकी कृपा से सृष्टि का निर्माण हुआ। उन्हें आदिशक्ति के रूप में जाना जाता है।

माँ कूष्माण्डा का यह रूप बहुत ही अद्भुत और अलौकिक है। वे अपनी मंद मुस्कान से पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित करने वाली देवी हैं। माँ कूष्माण्डा के नाम का अर्थ भी अत्यंत गहन है। "कू' का अर्थ हैं लघु। 'उष्मा' का अर्थ हुआ ऊर्जा या ताप। यहां 'अंड' का मर्म हुआ ब्रह्मांड। पौराणिक कथा के अनुसार, जब ब्रह्मांड में चारों ओर घोर अंधकार था और जीवन की कोई आशा नहीं थी, तब माँ कूष्माण्डा ने अपनी मंद मुस्कान से इस सृष्टि का सृजन किया। इसलिए उन्हें सृष्टि की आदिशक्ति माना जाता है। माँ के इस रूप में अपार ऊर्जा और शक्ति का भंडार है।

माँ कूष्माण्डा की आठ भुजाएँ हैं, इसलिए उन्हें अष्टभुजी भी कहा जाता है। उनके हाथों में कमल का फूल, अमृत का कलश, कमंडल, और विभिन्न अस्त्र-शस्त्र हैं। वे सिंह पर सवार हैं, जो उनके साहस और शक्ति का प्रतीक है।

नवरात्रि के चौथे दिन, माँ कूष्माण्डा की पूजा का विशेष महत्व है। उनकी पूजा से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। उनकी आराधना से आयु, यश, और बल का वरदान मिलता है। माँ कूष्माण्डा की कृपा से भक्तों के सभी रोग, शोक, और दुखों का नाश हो जाता है।

माँ कूष्माण्डा की आराधना से मानसिक शांति और संतुलन की प्राप्ति होती है। वे हमें अज्ञानता और नकारात्मकता के अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती हैं। उनकी कृपा से हम जीवन में स्थिरता, समृद्धि और सुख-शांति का अनुभव करते हैं।"

माँ कूष्माण्डा की आराधना से भक्तों के जीवन में सुख, समृद्धि, और आरोग्य का संचार होता है। वह अपने भक्तों को जीवन में शक्ति और साहस प्रदान करती हैं। माँ की कृपा से हमें जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति मिलती है।

नवरात्रि का पांचवां दिन

नवरात्र का पाँचवां दिन माँ स्कन्दमाता को समर्पित होता है। माँ स्कन्दमाता, जो भगवान कार्तिकेय की माता हैं, मातृत्व की मूरत मानी जाती हैं। उनका यह रूप ममता, साहस और करुणा का अद्वितीय संगम है।

माँ स्कन्दमाता अपने पुत्र भगवान स्कन्द को गोद में लिए सिंह पर विराजमान हैं। उनके चार हाथ हैं—दो हाथों में कमल के पुष्प, एक हाथ में आशीर्वाद की मुद्रा और एक हाथ में अभय मुद्रा है। उनके इस दिव्य स्वरूप से अद्भुत तेज, शांति और मातृत्व स्नेह का भाव झलकता है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार, जब असुर तारकासुर ने स्वर्गलोक पर अपना आतंक फैला रखा था, तब देवताओं ने माँ स्कन्दमाता की पूजा की और उनके पुत्र भगवान स्कन्द को युद्ध के लिए प्रकट होने का आशीर्वाद मिला। स्कन्दमाता ने अपने पुत्र को युद्ध में भेजा, जिन्होंने तारकासुर का वध कर देवताओं की रक्षा की। माता अपनी कृपा से भक्तों की रक्षा करती हैं और सभी संकटों से उबारती हैं। इसलिए माँ को वीरता और ममता का अद्भुत संगम माना जाता है।

स्कंदमाता

माँ स्कन्दमाता की पूजा का विशेष महत्व यह है कि उनकी कृपा से जीवन के सभी कष्टों और अज्ञान से मुक्ति मिलती है। वह अपने भक्तों को आश्रय देती हैं और उनके सारे दुखों का अंत करती हैं। उनके भक्त उन्हें कमल के फूल अर्पित करते हैं, साथ ही सफेद वस्त्र और मिठाई का भोग चढ़ाते हैं। जो भक्त माँ स्कन्दमाता की सच्चे हृदय से आराधना करता है, उसे अलौकिक सुख, समृद्धि और संतान का आशीर्वाद मिलता है।"

माँ स्कन्दमाता की कृपा से व्यक्ति के भीतर कल्याण की भावना और साहस का संचार होता है। माता भक्तों की रक्षा करती हैं और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देती हैं। उनके आशीर्वाद से भक्त को मानसिक शांति, बुद्धि और संतान सुख की प्राप्ति होती है। उनकी पूजा करने से शांति, समृद्धि और शक्ति का वरदान प्राप्त होता है।"

जो भी भक्त सच्चे हृदय से माँ स्कन्दमाता की पूजा करता है, उसकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। उनकी आराधना से हमें न केवल भौतिक सुख मिलते हैं, बल्कि जीवन की आध्यात्मिक उन्नति भी होती है।

नवरात्रि का छठवां दिन

नवरात्रि के छठे दिन, माँ दुर्गा के छठे रूप, माँ कात्यायनी की उपासना की जाती है। माँ कात्यायनी शक्ति, साहस और विजय की देवी हैं। इन्हें कात्यायन ऋषि की पुत्री कहा जाता है, इसलिए इनका नाम कात्यायनी पड़ा।

माँ कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत शक्तिशाली और तेजस्वी है। वे चार भुजाओं वाली हैं, जिनमें से दो हाथों में खड्ग और कमल का पुष्प धारण किए हुए हैं, जबकि अन्य दो हाथ अभय और वर मुद्रा में हैं, जिससे वे अपने भक्तों को सुरक्षा और आशीर्वाद प्रदान करती हैं। उनका वाहन सिंह है, जो साहस और शौर्य का प्रतीक है।"

शास्त्रों में वर्णित है कि माँ कात्यायनी ने राक्षस महिषासुर का वध करके संसार को उसके आतंक से मुक्त कराया था। इसलिए इन्हें महिषासुरमर्दिनी के रूप में भी पूजा जाता है। माँ का यह रूप समस्त आसुरी शक्तियों का नाश करने और धर्म की स्थापना करने के लिए अवतरित हुआ था।

माँ कात्यायनी

माँ कात्यायनी का पूजन करने से भक्तों को साहस, शौर्य और आत्मविश्वास की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि माँ कात्यायनी कन्याओं की रक्षा करती हैं और उनको जीवन में योग्यता और साहस का वरदान देती हैं। माँ कात्यायनी की उपासना से भक्त अपने जीवन की सभी बाधाओं और संकटों से मुक्त होते हैं। उनके आशीर्वाद से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है, और जीवन में शांति और समृद्धि आती है।

नवरात्रि के छठे दिन माँ कात्यायनी की आराधना करने से हमें अदम्य शक्ति, अपार साहस और जीवन की हर कठिनाई को पार करने का सामर्थ्य मिलता है। माँ कात्यायनी की पूजा इस विश्वास के साथ की जाती है कि वे हमारे भीतर की बुराइयों और कमजोरियों का नाश करें और हमें सच्चे धर्म के पथ पर चलने का आशीर्वाद दें।"

नवरात्रि का सातवां दिन

नवरात्रि के सातवें दिन का विशेष महत्व है, क्योंकि इस दिन माँ दुर्गा के सातवें स्वरूप—माँ कालरात्रि की पूजा की जाती है। काल, यानी समय और रात्री, यानी अंधकार—माँ कालरात्रि उन अंधकारों का नाश करती हैं, जो जीवन को अव्यवस्थित और भयपूर्ण बना देते हैं।

मां कालरात्रि

माँ कालरात्रि का नाम सुनते ही हमारे मन में एक तेजस्वी, अद्भुत और भयावह रूप का स्मरण होता है.... माँ कालरात्रि का स्वरूप विकराल है....उनका रंग काजल की तरह काला है, जैसे कि अंधकारमयी रात। इसी कारण उनका नाम पड़ा 'कालरात्रि।' उनके गले में बिजली जैसी झलकती हुई माला है.... उनका चेहरा उग्र दिखता है, परन्तु यह रूप केवल असुरों और दुष्ट शक्तियों के लिए है। माँ का रूप जितना भयानक दिखता है, उनका हृदय उतना ही कोमल और दयालु है....माँ अपने भक्तों के लिए कल्याणकारी हैं...

माँ कालरात्रि की चार भुजाएं हैं—दो हाथों में वे खड्ग और काँटा धारण करती हैं, जो बुराई के अंत का प्रतीक हैं....उनके अन्य दो हाथ वरद और अभय मुद्रा में हैं, जो उनके भक्तों को सुरक्षा और आशीर्वाद प्रदान करते हैं.... उनके तीव्र रूप का प्रतीक है उनका तीसरा नेत्र, जो जगत के मिथ्या रुप को नहीं सत्य को पहचानने की शक्ति प्रदान करता है। इस नेत्र से अग्नि की ज्वालाएँ प्रकट होती हैं, जो हर असुरी शक्ति को भस्म कर देती हैं। वे उन तमाम बुराइयों का विनाश करती हैं जो मानवता के मार्ग में बाधक होती हैं।

माँ कालरात्रि का वाहन गर्दभ है, जो उनका गहन संतुलन और धैर्य दर्शाता है। ये इस बात का प्रतीक है कि वे जीवन के कठिन और जटिल मार्गों से भी अपने भक्तों को सुरक्षित बाहर निकाल लेती हैं....

माँ कालरात्रि की पूजा करने से जीवन के सभी भय नष्ट हो जाते हैं, और नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती है.... वे अपने भक्तों को हर प्रकार की बुरी शक्तियों और संकटों से मुक्त करती हैं... पुराणों के अनुसार, माँ कालरात्रि ने रक्तबीज जैसे अजेय राक्षस का वध किया था.... इस असुर की विशेषता थी कि जब भी उसके रक्त की बूँदें धरती पर गिरती थीं, उससे नए राक्षस जन्म लेते थे। माँ कालरात्रि ने अपने विकराल रूप से ऐसे भयानक असुर का संहार किया। ये इस बात प्रतीक है कि हर बुराई...एक नयी बुराई को जन्म देती है....इसलिए हमें अपने अंदर की नकारात्मक शक्तियों का समूल नाश करने की आवश्यकता होती है....

नवरात्रि के इस पावन दिन माँ कालरात्रि की पूजा करके हमें अपने भीतर की बुराइयों, डर और नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने का संकल्प लेना चाहिए। माँ अपने भक्तों को न केवल सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि उन्हें आत्मबल और शक्ति का आशीर्वाद भी देती हैं।

नवरात्रि का आठवां दिन

नवरात्रि के आठवें दिन, हम माँ महागौरी की पूजा करते हैं। महागौरी, मां दुर्गा का आठवां दिव्य स्वरूप हैं। उनका नाम ही उनके पवित्र, उज्ज्वल और श्वेत रूप को दर्शाता है। मां का ये रूप शांति, तपस्या, और मोक्ष का प्रतीक है।

माँ महागौरी का रूप अत्यंत गोरा और चमकदार है। उनके इसी गौर वर्ण के कारण उन्हें 'महागौरी' कहा जाता है। उनके इस रूप में भक्तों को पवित्रता और तपस्या की प्रेरणा मिलती है। वे सफेद वस्त्र धारण करती हैं, जो सरलता और सादगी का प्रतीक है। उनका रूप दिव्यता, शुद्धता और पवित्रता से परिपूर्ण हैं।

माँ महागौरी की चार भुजाएं हैं— एक हाथ में त्रिशूल है, जो शक्ति का प्रतीक है, जबकि दूसरे हाथ में डमरू है, जो सृष्टि में ऊर्जा के संगीत का प्रतीक है। तीसरा हाथ वरद मुद्रा में है, जिससे भक्तों को आशीर्वाद और वरदान प्राप्त होता है। और चौथा हाथ अभय मुद्रा में है, जो भक्तों को भय से मुक्ति प्रदान करता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, मां महागौरी देवी पार्वती का ही रूप हैं। जब उन्होंने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की। तो उनके शरीर का रंग काला हो गया था। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर, भगवान शिव ने उन्हें गंगा जल से स्नान कराया, जिससे उनका रंग अत्यंत गोरा और चमकदार हो गया। तभी से वे महागौरी के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

माता महागौरी

मां महागौरी की पूजा नवरात्रि के आठवें दिन की जाती है, जिसे अष्टमी के नाम से जाना जाता है। यह दिन विशेष रूप से कन्या पूजन के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। मां महागौरी भक्तों को सुख-शांति, समृद्धि और मोक्ष का वरदान देती हैं। उनकी कृपा से भक्तों के पाप नष्ट हो जाते हैं और उनका जीवन पवित्र और शुद्ध हो जाता है।

मां महागौरी का यह रूप हमें धैर्य, तपस्या और समर्पण की शिक्षा देता है। उनकी आराधना से हमारे जीवन में कठिनाइयों का अंत होता है और शांति और समृद्धि का आगमन होता है।

नवरात्रि का नौवां दिन

नवरात्रि के पावन अवसर पर देवी के नौ दिव्य स्वरूपों की आराधना की जाती है। नवरात्रि के अंतिम दिन, मां दुर्गा के नवें स्वरूप मां सिद्धिदात्री की आराधना की जाती है। सिद्धिदात्री, जो सभी प्रकार की सिद्धियों की दात्री हैं, वे अपने भक्तों को आध्यात्मिक शक्तियों का वरदान देती हैं और उन्हें मोक्ष की ओर ले जाती हैं।

मां सिद्धिदात्री का रूप अत्यंत दिव्य और अलौकिक है। वे कमल के पुष्प पर विराजमान हैं, जो ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है। उनकी चार भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, और कमल का फूल सुशोभित हैं। ये सभी आयुध, शक्ति, धर्म और आध्यात्मिकता के प्रतीक हैं। मां के इस स्वरूप में, वे ब्रह्मांड की सम्पूर्ण शक्तियों का संचय करती हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार, मां सिद्धिदात्री ही वह देवी हैं जिन्होंने भगवान शिव को अर्धनारीश्वर रूप प्रदान किया। जब भगवान शिव ने आध्यात्मिक सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए मां की आराधना की, तब मां ने उन्हें अपनी सिद्धियों का आशीर्वाद दिया और इसी कारण शिव अर्धनारीश्वर बने, जहां उनका आधा शरीर शक्ति स्वरूपा देवी का है। मां सिद्धिदात्री की पूजा से सभी प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

मां सिद्धिदात्री

उनके भक्त न केवल सांसारिक जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं, बल्कि वे आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष की ओर भी अग्रसर होते हैं। मां की कृपा से समस्त भौतिक और आध्यात्मिक इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

मां सिद्धिदात्री की आराधना नवरात्रि के नौवें दिन विशेष रूप से की जाती है। इस दिन, भक्त उनका ध्यान करते हैं और उनसे सिद्धियों और आत्मबल की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं। वे भक्तों को भय से मुक्ति दिलाती हैं और जीवन को सफल बनाती हैं। उनकी कृपा से जीवन में आने वाली सभी बाधाएं समाप्त होती हैं।

मां सिद्धिदात्री का यह रूप हमें यह सिखाता है कि जीवन में केवल भौतिक सुख ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति भी महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति समर्पण के साथ मां की पूजा करता है, वह जीवन की सभी सफलताएं प्राप्त करता है और अंततः मोक्ष को प्राप्त करता है।"

आइए, इस नवरात्रि पर मां सिद्धिदात्री का आशीर्वाद प्राप्त करें और अपने जीवन को सिद्धियों और शांति से परिपूर्ण बनाएं। मां सिद्धिदात्री हमें यह सिखाती हैं कि आत्म-साक्षात्कार ही सर्वोच्च सिद्धि है, और उसकी प्राप्ति से सभी कष्टों का अंत होता है।"

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailash Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Amit Sharma responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.
Email:
youngster@tecnia.in